[Shri Amar Prosad Chakraborty]

have also referred to the letters of Lord Mountbatten wherein he had stated that there is no record to show Bose did not die in the plane crash. This has been published in the newspapers. In reply to a letter from the Indian High Commissioner, Lord Mountbatten informed Mr. Goray that he had not seen any document in the archives to show that Netaji died in the plane crash on the 18th August, 1945. Therefore, I am bringing it to your notice and I would request the Government to place these documents before this House.

REFERENCE TO REPORTED INCIDENTS IN MARATHWADA

श्रीमती सरोज खापर्डे (महाराष्ट्र) : मह.राष्ट्र में में 29 जुलाई को महाराष्ट्र की नयी सरकार ने मराठवाड़ा यूनिवर्सिटी का नाम बदल कर डा० बाबा साहब अम्बेडकर मराठवाड़ा विद्यापीठ करने का निर्णय लिया था. .

श्री सुन्दर सिंह भंडारी (उत्तर प्रदेश) : यह नयी सरकार ने बदला है ?

श्रीमती सरोज खापर्डे : आप की नयी सरकार ने बदला है और महाराष्ट्र के मुख्य मन्त्री श्रीशरद पवार ने खुद हाराष्ट्र की विधान सभा में मराठवाडा यूनिवर्सिटी का नाम डा० बाबा साहब अम्बेदकर मराठवाड़ा विद्यापीठ रखा जाय इस विषय का एक रेजोल्यूशन मूव किया था और यह रेजोल्यूशन विधान सभा और विधान परिषद् दोनों सदनों में पास हुआ। यह निर्णय लेने के बाद मराठवाड़ा में एक ऐसी सिचुयेशन का निर्माण हुआ जिसके परिणामस्वरूप हरिजनों पर, दलितों पर अन्याय और अत्याचार हुए। मुझे यह समझ मे नही आ रहा है कि डा० बाबा साहब अम्बेदकर यूनिवर्सिटी का नाम सुनते ही कुछ लोगों में ऐसी कौनसी बात आ गयी कि जिसके कारण इस आन्दोलन की शुरुआत वहां हुई। राज्य शासन के निर्णय से निर्मित हुए वातावरण और उसके समाधान न करने से मराठवाड़ा मे, महाराष्ट्र में हरिजनों पर जबरदस्त पैमाने पर अत्याचार शुरू हो गये। वहां उन्हें साक्षात मारा जा रहा है उन्हें साक्षात काटा जा रहा है। उनके घर जलाये जा रहे हैं। आपने पढ़ा भी होगा भिण्ड जिले में धर्मपुर में हरिजनों के सात घर जलाये गये। सारे अखबारों में यह खबर छप चुकी है। मुझे ऐसा लगता है कि यह खबर इन्हीं घटनाओं की यह एक कडी है। यह एक शुरूआत है। हरिजनों की जान की सुरक्षा करने में महाराष्ट्र की सरकार असफल रही है। कानून और व्यवस्था को काबू में रखने के लिये और हरिजनों की जान की सुरक्षा करने के लिये महाराष्ट्र शासन नाकामयाब है। इतना ही नही मराठवाडा मे ही नही इस आन्दोलन की आंच महाराष्ट्र के और भी भागों में फैल चुकी है। मुझे आपके सामने एक बात रखनी बहुत आवश्यक लग रही है। जहां एक तरफ महाराष्ट्र का मंत्रीमंडल शपथग्रहण कर रहा था, वहां एक तरफ महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री राज भवन अपने मन्त्रिमण्डल का विस्तार कर रहे थे उसको देखते हुए दूसरी तरफ़ यह नजर आ रहा था कि जहां मिनिस्टर्स और इनके कुलीग्ज फूलों की माला पहन रहे थे वहां माराठवाड़ा में गोलियां चल रही थीं रेलवे स्टेशन जलाये जा रहे थे। इतना ही नही महाराष्ट्र के अन्य जगहों पर पहुंचने के लिए किसी प्रकार की सुविधा न हो उन्हें किसी प्रकार से यहां से जानकारी न जाए इसलिए टेलीफोन के वायर्स भी काट दिये गये थे। इतना ही नहीं मराठवाड़ा से कुछ लोग भाग कर दिल्ली पहुंचे है। उन्होंने वहां का हाल यहां बयान किया था। वहां की हालत दुनिया के लोगों को और किसी को भी वहां की सत्यता का पता न चले इस लिए पेड़ काट-काट कर रास्ते मे डाले गये हैं जिससे कोई कार कोई बैलगाड़ी न जा सके न ट्रकें जा सकें ताकि वहां जलने वाले हरिजनों के ऊपर जो अन्याय हो रहा है उसका किसी को पता न चले। यह सब प्री-प्लेड किया गया है। रेलवे के सिगनल उखाड़े

रा रहे हैं। रेल के डिब्बे जलाये जा रहे हैं। रास्ते में जो पुलें है उनको उखाड़ा जा रहा है। औरंगाबाद, जालन, बीजापुर, अम्बाड़ में बन्द के कारण एक प्रकार की मायूसी छाई हुई है। पद के लालच से अपनी पार्टी को छोड़ कर निकले हुए जो लोग है अपने अधिकार की कुर्सी से जब अपने आप का बांध रहे थे उस समय एक बड़ा गम्भीर कोलाहल उधर मराठवाड़ा मे चल रहा था। डा० बाबा अम्बेदकर साहब का नाम मराठवाड़ा यूनिवर्सिटी के साथ जोड़ देने के कारण इतना आवश्यक नहीं था। बसन्त दादा पाटिल के मन्त्रिमण्डल को गाड़ने के लिए जिन लोगों ने गड्डा खोदा था वही अब उस गड्ढे में जाकर गिरने वाले है।

श्रीमन्, मुझे आप से एक और निवेदन करना था कि हरिजनों की झोंपड़ियां जलाई जा रही है और शासन हाथ पर हाथ रख कर बैठा हुआ है।

मैं आपको एक चीज और बताना चाहती हूं। एक टेलीग्राम मुझे मिला है जो मराठवाड़ा से लिखा हुआ है। मैं इसको पढ़ कर आपको सुनाना चाहती हू --

"Dalit Budhists all over Marathwada being tortured, beaten, wounded, murdered, house also burnt by communal-minded orthodox Hindus. Budhists population including employees in danger so need immediate casteless protection. At many places photoes of Dr. Babasaheb Ambedkar along with blue flags being insulted by inhuman provocative performances and tyranies. All communications closed down. Request prompt action justice by arranging military protection otherwise Budhists bent upon migration under prevailing democracy."

इस ट्रेलीग्राम को भेजने वाले है महाराष्ट्र वाड़ा के जाने माने फ्रीडम फाइटर लोग।

इसके अतिरिक्त मैं आपको यह भी बताना चाहूंगी कि यहां पर आज ही टाइम्स आफ इण्डिया के फ्रंट पेज पर लिखा हुआ है--

"Marathwada agitation suspended".

लेकिन उसी के नीचे आप देखेंगे तो उसमें यह लिखा हुआ है--

"Midnight burning of Harijan hutments."

मैं आपको यह बताना चाहूंगी कि नान्देड़ के 6 अगस्त के समाचार मे यह लिखा हुआ है--

Smouldering huts wailing women and helpless menfolk greeted newsmen who visited Dhanegaon, six kilometres from here where 81 Harijan hutments were burnt down by a violent mob in the early hours of today."

इस तरह की घटनायें यहां पर होती जा रही हैं। इतना ही नहीं हमारा जो लोकल पेपर है 'नवभारत' इसमें बहुत स्पष्ट रूप से किसी प्रकार का नमक-मिर्च न लगाते हुए लिखा है कि "नगर में गोली से 13 घायल। आम्बेडकरवादियों के मोर्चे के दौरान स्थिति उग्र। मराठवाड़ा विश्वविद्यालय के नाम परिवर्तन के विरोध में वहां जारी आन्दोलन के जवाब में आज यहां डा० आम्बेदकरवादी छात्रों द्वारा आयोजित मोर्चे के उग्र रूप धारण करने पर पुलिस ने गोली चलाई।"

यह ऐसे वक्त गोली चलाई गई जबकि गोली चलाने का कोई कारण नही था। इसका नतीजा यह हुआ कि 13 लोग गोली से घायल हो गये। मेरी इन्फरमेशन के अनुसार नागपुर के लोगों ने मुझे जो ट्रंक-काल और ट्रेलिग्राम भेजा है उसमे लिखा है 145 लोग गम्भीर रूप से घायल नागपुर अस्पताल में एडमिट है। मुझे गोली चलाने का कोई कारण अभी तक समझ नहीं आया। लेकिन वहां के

[श्रीमती सरोज खापर्डे]

लोगों ने मुझे जो बताया वह यह है कि किसी जगह लोगों की भीड़ थी और जिन लोगों के वहां घर थे मकान थे वे लोग अपने-अपने घरों से उस प्रामाणित भीड़ को देखने के लिये बाहर आए तो उन पर पुलिस ने गोली चलाई । जिसका नतीजा यह हुआ कि वहां चार लड़के मारे गये और दो लड़के बिल्कुल बुरी तरह से घायल हुए । यह बिल्कुल हमारे घर के सामने जहां मैं रहती हूं उसके चारों तरफ नवबाद्धिस्ट्स बस्ती है चारों तरफ हरिजन बस्ती है । वह सारा एरिया बुद्धिस्ट के नाम से परिचित है । ऐसा लगता है अनावश्यक रूप से जबकि कोई कारण नहीं था गोली चलाई गई । इसका नतीजा यह हुआ कि आन दी स्पोट 22 साल का लड़का गोली लगने से मारा गया । आपको आश्चर्य होगा कि जिस तरह से गोली चलाई जा रही है उससे ऐसा लगता है कि पुलिस इस तरह से गोली मारती है कि वह वहीं पर खत्म हो जाए वह बच न पाये । पुलिस कमर के ऊपरी हिस्से पर गोली चलाती है और गोली इस तरह से चलाती है जिस तरह से जानवरों पर गोली चलाई जाती है । जिस तरह से उन पर गोली चलाई गई है उससे वहां बुद्धिस्टों और हरिजनों में आतंक छाया हुआ है वह यह कि उनकी समझ नहीं आ रहा है कि इसके बाद क्या होने वाला है । शाम कैसे गुजरेगी दिन कैसे निकलेगा सुबह कैसे होगी । इस तरह का वातावरण फैला हुआ है ।

यहां इसी 'नवभारत' अखबार में यह भी लिखा हुआ है कि अनेक क्षेत्रों में लूटपाट पथराव, आग । इन्दौर क्षेत्र में पुलिस ने दो बार गोली चलाई जिससे चार नागरिकों की मृत्यु हुई । गोली चलाने का कारण मालूम नहीं हुआ । अखबार से मुझे मालूम हुआ है कि वे हरिजनों को जिन्दा मारना चाहते है । उन लोगों ने तय किया हुआ है कि इस देश से हरिजनों को हमेशा-हमेशा के लिये खत्म कर दें ताकि उनका राज बना रहे ।

मैं आपको बताना चाहती हूं कि 'तरुण भारत' अखबार में भी लिखा है । यह हमारा अखबार नहीं है आप लोगों का अखबार है । जनसंघ वालों का अखबार है आर० एस० एस० वालों का अखबार है । अब आप यह नहीं कह सकते कि यह खबर हमने छपवा दी हमने लिखवा दी । मेरा यह कहना है इस तरह से आपके राज में गोली चल रही है और हरिजन जहां जैसा खड़ा है उसे वहां गोली मारने का निश्चय किया हुआ है ।

मराठवाड़ा में शायद आपको मालूम नहीं होगा मैं आपको बताना चाहती हूं कि मराठवाडा के जिन लोगों ने यह सारी घटना अपनी आंखों से देखी है उन्होंने कहा है जो आन्दोलनकारी हैं उन्होंने कहा है मैं किसी से डरने वाली नहीं हूं । मुझे किसी व्यक्ति का नाम लेने में कोई संकोच नही है । शरद् पवार है उनका नाम । उन्होंने परसों यह कहा था कि आन्दोलनकारियों पर आप किसी प्रकार से हरकत न लीजिए । किसी प्रकार आप उन पर ऐक्शन न लीजिए । जब इस प्रकार से शरद् पवार कहते हैं तो इसका मतलब यह है कि आप सिर्फ हरिजनों पर गोली चलाने की बात कहते हैं । बुद्धिस्टों के ऊपर गोली चलाने की बात कहते हैं और ऐसा कह कर आप उन लोगों को एंकरेजमेंट करते हैं । इससे साफ जाहिर है कि आपका इरादा हरिजनों पर, बुद्धिस्टों पर गोली चलाने का है और उनके प्रति आपका व्यवहार अच्छा नहीं है ।

इतना ही नही आपकी जानकारी के लिये मैं कहना चाहूंगी कि मराठवाड़ा में डाक्टर बाबा साहेब अम्बेडकर ने शैक्षणिक संस्थाएं शुरू की थीं । जो मोस्ट बैकवर्ड एरिया हैं वहां पर एजूकेशन सोसाइटियां शुरू की थी जिसमें बाद में बहुत अच्छी तरह से सार्वजनिक रूप से एजूकेशन का कार्य शुरू हुआ था । आप देखेंगे कि महाराष्ट्र में ज्योतिबा खुले के नाम से यूनिवर्सिटी बन सकती है । विदर्भ में पंजाबराव के नाम से यूनिवर्सिटी बन सकती है लेकिन

डाक्टर अम्बेडकर जिसने इस देश का संविधान बनाया है बाबा साहेब अम्बेडकर जैसे महान् व्यक्ति इस देश में थे ऐसे व्यक्तियों के नाम से आप मराठवाड़ा में यूनिवर्सिटी नहीं दे सकते। वहां पर जो नव-बौद्धों और हरिजनों के नेता हैं उनको परेशान किया जा रहा है। चूंकि बाबा साहेब अम्बेदकर नव-बौद्धों और हरिजनों के नेता थे और उन्होंने इस देश का संविधान बनाया था इसलिए ये लोग उनसे नाराज हैं। उन लोगों को इस बात का दुख होता है कि किसी यूनिवर्सिटा का नाम बाबा साहब के नाम पर रखा जाय। इन हरिजनों के विरोधी लोगों ने मराठवाड़ा में इस प्रकार का वातावरण बनाया कि सभी लोग इन नव-बौद्धों और दलितों के खिलाफ हो गये। इन लोगों ने कुछ इस प्रकार का प्रचार किया कि अगर इस यूनिवर्सिटी का नाम बाबा साहेब अम्बेदकर जी के नाम पर रखा गया तो मराठवाड़ा पर एक धब्बा लग जाएगा।

श्रीमन् इसी प्रकार से मैं आपका ध्यान टाइमस आफ इण्डिया की इस खबर की ओर भी दिलाना चाहती हूं कि जब मराठवाड़ा विश्वविद्यालय का नाम डा० बाबा साहब अम्बेदकर जी के नाम पर रखने का निर्णय किया गया तो वहां पर कुछ लोगों ने यह प्रचार किया कि जो विद्यार्थी या बच्चे इस यूनि-वर्सिटी से डिग्रियां लेकर जाएंगे उनकी डिग्रियों में बाबा साहब का फोटो भी लगाना होगा और उस फोटो को उन विद्यार्थियों को अपने घरों में लगाना होगा। इस प्रकार से कुछ लोगों ने जातिवाद की भावनाओं को भड़का कर नव-बौद्धों और दलितों के विरुद्ध प्रचार किया। मैं यह स्पष्ट शब्दों में कहना चाहती हूं कि महाराष्ट्र के अन्दर यह जो गलत प्रचार किया जा रहा है, हम लोग हमेशा इसका प्रतिकार करते रहेंगे। आपने अगर 50 दलितों और बौद्धों को मारा है तो और 500 हरिजन पैदा हो जाएंगे और वे इस नीति का प्रतिकार करते रहेंगे। आपको इस बात को याद रखना चाहिए कि इस प्रकार से हरिजनों को मारने से और बौद्धों को मारने से और बाबा साहब अम्बेदकर के अनुयायियों के साथ अन्याय करने से दलितों और बौद्धों की समस्याय कम होने वाली नहीं हैं। वे लोग इसका अवश्य बदला लेंगे। आपको यह भी याद रखना चाहिए कि नागपुर के नव-बौद्ध और दलित शरत पवार की सरकार को कभी चलने नहीं देंगे। जितने लोग नागपुर की वारदातों में मारे गये हैं उतने ही लोग और उतने ही बच्चे आपकी सरकार से बदला लेकर रहेंगे। हम यह भी देखेंगे कि आने वाला महाराष्ट्र विधान सभा का विंटर सेशन जो नागपुर में होगा उसके सम्बन्ध में श्री शरद पवार किस तरह से नागपुर में घुसते हैं। अगर आपकी सरकार ने दलितों और नव-बौद्धों पर होने वाले इन अत्याचारों को नहीं रोका तो हम वहां पर आपकी सरकार को अवश्य गिरा देंगे। आप इस बात को याद रखिये हमारा भी नाम दलित नहीं अगर हमने आपकी सरकार को नहीं गिराया।

उपसभापति जी मैं दूसरी बात की तरफ भी आपका ध्यान दिलाना चाहती हूं जो इसी समस्या से सम्बन्धित है। मेरे पास राजस्थान से निकलने वाला एक अखबार "राष्ट्रदूत" है जो इन लोगों का अपना अखबार है... (*Interruptions*) इस अखबार में शंकराचार्य का एक बयान छपा है। इसमें लिखा है कि "फांसी के तख्ते पर लटक जाने तक की सजा भोगने के लिए मैं तैयार हो सकता हूं पर वर्ण-व्यवस्था गति कर्म से है न कि जन्म से है। ऐसा करने को मैं कभी तैयार नहीं हो सकता।" इस प्रकार का शंकराचार्य का बयान है।... (*Interruptions*) यह इसी साल का अखबार है। इसमें आगे लिखा है—"निरंजन देवतीर्थ शंकराचार्य जगद्गुरु गोवर्धन मठ पुरी ने यहां कहा। श्री जगद्गुरु ने कहा कि मेरे वकील ने मेरे विरुद्ध बोला। मेरे वकील ने मेरे से बिना पूछे ही यह कह दिया कि "जाति कर्म से है जन्म से नहीं।" छूआछूत से सम्बन्धित कोल्हापुर मे महाराष्ट्र

[श्रीमती सरोज खापर्डे]

सरकार के एक मामले में बहस में वकील ने इस तरह विवरण दे दिया । "मेरे कहने की मतलब यह है कि मराठवाड़ा में इस प्रकार की घटनाओं के पीछे किन लोगों का हाथ है इस विवरण से यह बात साफ हो जाती है । कुछ लोगों ने लोगों की धार्मिक भावनाओं को भड़काया है । मुझे लगता है कि इन सारे उपद्रवों के पीछे शंकराचार्य जैसे लोगों का हाथ है । हमारे देश में कई लोग इस प्रकार के हैं जो इस देश दलितों आदिवासियों नव-बौद्धों को खत्म करने पर तुले हुए हैं और उन्होंने इन लोगों के खिलाफ काम करना शुरू कर दिया है ।

श्रीमन्, इसके साथ-साथ मैं एक बात यह भी सदन में रखना चाहती हूं कि मैं जब स्पेशियल मेंशन के सम्बन्ध में अनुमति प्रदान करने के लिए चेयरमैन साहब के पास गई तो वहां पर कई लोगों ने यह कहा कि इस मामले को स्पेशियल मेंशन में मत उठाने दीजिये । मुझे अत्यन्त दुख है इस बात का कि हमारे साथियों ने यहां पर यह कहा कि इस मामले को यहां पर न लाया जाये । क्योंकि यह मेरी स्टेट का मामला है और वहां पर दलितों के ऊपर अत्याचार हो रहे हैं, उनको वहां पर जिन्दा जलाया जा रहा है, मारा जा रहा है, काटा जा रहा है और पीटा जा रहा है । उनकी जो यह हालत है, जो दिक्कत है वह सारी मैं आपके सामने रखना चाहती हूं । मुझे यह सब रखने से वंचित करने की कोशिश की गई । मुझे ऐसा लगता है कि असल में वही लोग दलितों के और नव-बौद्धों के असली दुश्मन हैं जो कि इन सब बातों को सदन के सामने रखने के लिये मना करते हैं और चेयरमैन को यह सुझाव देते हैं कि इसके लिये मंजूरी मत दो, इसके लिये परमीशन मत दो । मुझे ताज्जुब है कि यही लोग कहते हैं कि हम हरिजनों, शोषितों के हित चाहने वाले हैं, हम हरिजनों का हित चाहते हैं, हम बौद्धों का सही हित चाहते हैं और शोषित और पिछड़े हुए समाज के असली संरक्षक हम लोग हैं । लेकिन ऐसे लोगों को दलितों, शोषित और पिछड़े हुए समाज का नेतृत्व करने का या उनके नेता बनाने का कोई अधिकार नहीं बनता है । मुझे एक बात याद आ गई कि छत्रपति शिवाजी ने अपने जमाने में दुबले और कमजोर वर्ग के लोगों को संरक्षण दिया था लेकिन उसी इलाके में और उन्हीं परम्पराओं पर हम चलने वाले हैं, ऐसा अपने को बताने वाले श्री शरद पवार के समय में वहां बौद्धों को काटा जा रहा है, हरिजनों पर अत्याचार हो रहा है । शरद पवार मन्त्रिमण्डल को वहां सत्ता में रहने का कोई अधिकार नहीं है । मेरा एक निवेदन यह है कि संसद् के दोनों सदनों की ओर से एक टीम महाराष्ट्र के मराठवाड़ा इलाके में भेजी जाये जो कि इसकी जांच करे । इतना ही नहीं मैं इस अवसर पर इस मन्त्रिमण्डल से इस्तीफे की भी मांग करती हूं । मैं बौद्ध समाज, पिछड़े हुए समाज, दलित समाज की भावनायें जो हैं उनको आप तक पहुंचाना अपना फर्ज समझती हूं । वह-भावना यह है कि महाराष्ट्र की बौद्ध जनता, हरिजन, दलित, शोषित समाज के लोगों को महाराष्ट्र की सरकार पर कौड़ी का विश्वास नहीं है । इसलिये केन्द्र सरकार यहां से आवश्यक व्यवस्था करे । इसके लिये यहां से एक विशेष पुलिस का दस्ता वहां जाये और वह इस मामले को इनवस्टीगेट करे और वहां के बौद्धों, हरिजनों और दलितों को संरक्षण देने का काम हाथ में ले । वहां के लोगों का, पिछड़े वर्ग के लोगों का शरद पवार मन्त्रिमण्डल पर कौड़ी का भी विश्वास नहीं है । यदि उन पर विश्वास होता तो मुझे यह सब कहने का यहां पर मौका न आता ।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Kulkarni.

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI (Maharashtra): Sir, I am very thankful... (*Interruptions*)

श्रीमती सरोज खापर्डे : स्पेशल मेंशन में हम यह सब कह सकते हैं और अपनी मांग...

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: Sir, I am very thankful to

you for giving me a chance after my hon. friend Mrs. Khaparde has spoken.

SHRIMATI SAROJ KHAPARDE: You are the real well-wisher of the Harijans!

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: I know who are the real well-wishers of the Harijans. I will explain shortly... (*Interruptions*) Sir, I would request hon. Members on this side and that side to keep a little silent since I want to make my point very clear. I must place the facts before you. Mr. Vaishampayen, who also hails from Marathwada and who is an Independent Member, and I went to the Chairman and we requested him that since this agitation is taken back, let no special mention be made here since it will unnecessarily create a bitterness. I had no other intention at all. Let Madam take the floor of the House and give a sermon for another two hours on her attitude to Harijans which is a gimmicry. I have got nothing to say on that.

Now I want to meet first the political points which have been made by my friend here. Otherwise, on the matter of facts there is no truth in any of her allegations...

SHRI YOGENDRA MAKWANA (Gujarat): I am on a point of order. (*Interruptions*) Is any discussion allowed on a special mention and are any speeches allowed on a special mention? If it is so, we will also like to participate in the future.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No discussion or debate is allowed on this special mention, but permission was given to Shri A. G. Kulkarni for a special mention on the same subject.

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: I want to make a few points only. (*Interruptions*) Let me make my points.

SHRI L. R. NAIK (Karnataka): Let the Government answer it.

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: Sir, the first point is that it was stated here that the new Government of Mr. Sharad Pawar had passed this resolution in Cabinet. It was the previous Government of Mr. Vasant Rao Patil, which had unofficially resolved in the Cabinet that the name of the University should be changed as Babasaheb Ambedkar Marathwada University. Secondly, Sir, it was not Mr. Sharad Pawar..

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Just a minute. Mr. Maurya is on a point of order.

श्री बुद्ध प्रिय मौर्य (आंध्र प्रदेश) : श्रीमन्, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। इसी आधार पर, इस सम्बन्ध में मैंने पिछले सप्ताह में दो बार काल अटेंशन मोशन नोटिस दिया आडवाणी जी आप भी सदन के नेता होते हुए मेरा प्वाइंट आफ आर्डर सुन लीजिए। क्योंकि रेलगाड़ियां जलाई गई थीं, तोड़ी गई थी, पोस्ट-आफिस जलाए गए थे, लूटा गया था और इसके इलावा केन्द्रीय सरकार की और सम्पत्ति को जलाया गया था और लूटा गया था, गरीबों को भी लूटा गया, मारा गया और जलाया गया, इस सम्बन्ध में पिछले हफ्ते में दो बार काल अटेंशन नोटिस आपके सेवा में दिया। आज आपने इस पर स्पेशल मेंशन की आज्ञा दी। एक बार करीब 25 सदस्यों के दस्तखत से दिया, और दूसरी बार करीब 12-13 सदस्यों के दस्तखात से मैंने काल अटेंशन नोटिस दिया। मैं इस बारे में आपकी व्यवस्था जानना चाहूंगा कि स्पेशल मेंशन का ज्यादा महत्व है या काल अटेंशन मोशन का। आपने यह आवश्यक समझा कि इस पर चर्चा न हो तब आपने यह मेंशन के लिए इजाजत भी दे दी। अगर मेंशन की इजाजत दे दी है तो काल अटेशन मोशन का महत्व कहां चला गया? अगर है तो उन लोगों ने जिन्होंने काल अटेंशन मोशन नोटिस दिया था आप उनको कहां और किस मौके पर इस सदन में बोलने का स्थान देंगे? यही मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। पहले इसी विषय को लेकर काल अटेंशन मोशन आया और उसी विषय को लेकर स्पेशल मेंशन

[श्री बुद्ध प्रिय मौर्य]

आया, मैं आपसे यह जानना चाहता हूं कि किस किस को प्रेफेंस देना चाहिए। इस पर मै आपकी व्यवस्था जानना चाहूंगा।

श्री उपसभापति : कोई व्यवस्था इस आधार पर नही उठाई जा सकती है कि कौनसा मोशन स्वीकार होता है या अस्वीकार होता है। मोशन स्वीकार होना या स्पेशल मेंशन की इजाजत मिलना विशेष परिस्थितियों और नियमों के अनुसार होता है। एक मोशन को क्यों नहीं माना और दूसरे को क्यों इजाजत दी गई, इसके बारे में कोई व्यवस्था का प्रश्न नहीं उठता।

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: I want to submit to this House now that the new Government has not at all taken any decision on the naming of the University as the Babasaheb Ambedkar University in Cabinet. It was in an informal Cabinet meeting of the last Government of the collaborating parties that the decision was taken. Sir, in Maharashtra there are certain names like the Phule University, the Punjabrao University, the Shivaji University. I myself have no objection to name it as the Babasaheb Ambedkar University. It will be in the fitness of things. The ex-Chief Minister had stated very publicly that no personal names should henceforth be given. It is not Mr. Sharad Pawar's Government that is responsible, but it was the old Government Chief Minister who had stated publicly that no personal names should be given to any university whatsoever. Mrs. Khaparde says that Mr. Pawar is giving the name of Dr. Ambedkar, which is a lie. This takes care of the renaming of the university. The third point is, when this agitation was started and the students rightly thought that this is a regional university and there should be no name other than the name of Marathwada University, at that time the new Chief Minister appealed to the students and said that this name which is to be given to the university has been unanimously recommended by the legislature, but the Government has not taken a decision and it will decide after consultation with all the political parties and all the leaders of Marathwada and Maharashtra, and so the agitation should be suspended. Sir, at that time, one Mr. Baburao Kale, who was a Minister in the previous Government, along with others issued a statement that Mr. Sharad Pawar's decision is not proper and the university should not be renamed Babasaheb Ambedkar University. This was done by a Congress (I) Member who was a Minister in the previous Government and here Mrs. Khaparde speaks just contrary for public consumption. This is another point. Then, Sir, Mr. Sharad Pawar is from the beginning taking care and has publicly warned the police officers that it will be considered a very serious lapse if any Harijan busti was burnt or Harijans tortured. Now what has taken place has been totally under the provocation given at by irresponsible leaders of Cong.-I. The Government itself has taken proper care to see that the Harijan bustis are not burnt. Sir, what I want to say is that I really endorse the appeal made by the student community while suspending the agitation.

> "The resolution stressed the need to create confidence and a sense of security among the Dalit and especially a cordial and peaceful atmosphere in the region."

The provocation now being given by Cong.-I members is a political stunt. This is the most necessary thing which has to be undertaken immediately. We have to see that peace is established. I am surprised that the name of Shankaracharya was mentioned. I really detest the "Chatur Varna" system. But Mrs. Indira Gandhi has gone to the same Shankaracharya for "Ashirvad". I am surprised why Madam is criticising Shankaracharya. That poor soul is giving "Ashirvad" to Mrs. Indira

Gandhi as well as to the Janata Government and if needed to Mrs. Khaparde. (*Interruptions*)

श्रीमती सरोज खापर्डे : महात्मा गांधी की समाधि पर जाकर कसम खाते है. . . .

श्री कल्पनाथ राय (उत्तर प्रदेश) : उपसभापति महोदय, यह क्या हो रहा है क्या यह स्पेशल मेंशन है ?

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: What I want to bring to your notice is that whatever mention has been made, with due respect, is just like सौ चूहे खा कर बिल्ली हज को चली I am really sorry to say this. The real point is, the new Government has been embarrassed by the political attitudes of the Congress (I) Party. In one place, they instigate; in Nagpur they do something else through proxy. Actually we are here to protect the Harijans and all these crocodile tears are political gimmickry and nothing else.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri Bhupesh Gupta.

श्रीमती सरोज खापर्डे : सर, मैं कुछ कहना चाह रही हूं . . .

श्री उपसभापति : जैसे मैंने प्रारम्भ में कहा. . .

SHRI S. W. DHABE (Maharashtra): A resolution was passed unanimously by the Maharashtra Assembly ... (*Interruptions*)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: It will not go on record. Please don't speak.

(*Shri S. W. Dhabe continued to speak*)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Order, please.

(*Interruptions*)

Hon. Members who were permitted by the Chairman to make a 'special mention' have been allowed to do so and there will not be any more discussion. If Members feel aggrieved, they can again move for a 'special mention' but not today on this occasion. Mr. Bhupesh Gupta has the floor.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: This is an issue vitally concerned with us. You allowed certain Members. (*Interruptions*)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Only two requests were received for 'special mention', and the Chairman granted them.

SHRI BUDDHA PRIYA MAURYA: I have given a Calling Attention Notice. (*Interruptions*)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri Bhupesh Gupta.

3 P.M.

SHRI BUDDHA PRIYA MAURYA: I have given notices of calling-attention. My calling-attention motions are not accepted. You have not given me a chance while outsiders who have nothing to do with this issue are given the chance.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: You don't allow us when the issue concerns the Harijans. We represent Harijans in this House. Unless we are allowed...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: If you want a debate, you can move for it.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: You have allowed others to speak.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no. I said only two Members who gave notice for 'Special Mentions' were permitted by the Chairman to do so. That is all.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: You have allowed other Members also.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: If you want a debate, it is a different matter and you can move for it separately. Now, Mr. Bhupesh Gupta.